01-04-2023

प्राकृतिक खेती पर राष्ट्रीय मिशन

समाचार पत्रों में क्यों?

किसानों को रसायन मुक्त खेती अपनाने के लिए प्रेरित करने और प्राकृतिक खेती की पहुंच बढ़ाने के लिए सरकार ने 2023-24 से एक अलग और स्वतंत्र योजना के रूप में भारतीय प्राकृतिक कृषि पद्धति (BPKP) को बढ़ाकर राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन (NMNF) तैयार किया है।

त्वरित मुद्दा?

- NMNF की सफलता के लिए किसानों में रासायनिक आधारित आदानों से गाय आधारित स्थानीय रूप से उत्पादित आदानों में स्थानांतरित करने के लिए व्यवहार परिवर्तन की आवश्यकता होगी और इस प्रकार प्रारंभिक वर्षों में किसानों की जागरूकता, प्रशिक्षण, हैंडहोल्डिंग और क्षमता निर्माण के निरंतर निर्माण की आवश्यकता होगी।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि?

- देश भर में प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिये भारतीय प्राकृतिक कृषि पद्धति (BPKP) को बढ़ावा देकर राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन (NMNF) तैयार किया गया है।
- NMNF 15,000 क्लस्टर विकसित करके 7.5 लाख हेक्टेयर क्षेत्र को आवृत्त करेगा। अपने खेत में प्राकृतिक खेती शुरू करने के इच्छुक किसानों को क्लस्टर सदस्यों के रूप में पंजीकृत किया जाएगा, प्रत्येक क्लस्टर में 50 हेक्टेयर भूमि के साथ 50 या उससे अधिक किसान शामिल होंगे।
- प्रत्येक क्लस्टर एक गाँव भी हो सकता है या एक ही ग्राम पंचायत के तहत आने वाले 2-3 आसपास के गाँवों को शामिल कर सकता है।

अन्य प्रमुख तथ्य?

प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने हेतु

- परंपरागत कृषि विकास योजना (PKVY): NMNF भारतीय प्राकृतिक कृषि पद्धति (BPKP) का विस्तार है, जो परंपरागत कृषि विकास योजना (PKVY) के तहत एक उप-योजना है।
- PKVY उन किसानों को वित्तीय सहायता प्रदान करती है जो जैविक कृषि पद्धतियों को अपनाना चाहते हैं और उन्हें कीट प्रबंधन एवं मृदा की उर्वरता प्रबंधन हेतु पर्यावरण के अनुकूल तकनीकों का उपयोग करने के लिये प्रोत्साहित करती है।
- क्लाइमेट स्मार्ट एग्रीकल्चर:क्लाइमेट स्मार्ट एग्रीकल्चर भू-दृश्यों-फसल भूमि, पशुधन, वनों और मत्स्यपालन के प्रबंधन हेतु एकीकृत दृष्टिकोण है, जो खाद्य सुरक्षा तथा जलवायु परिवर्तन से जुड़ी चुनौतियों का समाधान करता है।
- इसका लक्ष्य तीन मुख्य उद्देश्यों से निपटना है: कृषि उत्पादकता और आय में लगातार वृद्धि करना, जलवायु परिवर्तन के प्रति अनुकूलन एवं निर्माण करना, साथ ही ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को कम करना।

- NMNF के तहत किसानों को ऑन-फार्म इनपुट उत्पादन बुनियादी ढाँचे के निर्माण के लिये तीन वर्ष हेतु प्रतिवर्ष 15,000 रुपए प्रति हेक्टेयर की वित्तीय सहायता मिलेगी
- किसानों को प्रोत्साहन तभी प्रदान किया जाएगा जब वे प्राकृतिक खेती के लिये प्रतिबद्ध हों और वास्तविक रूप से इसे अपना रहे हों।
- किसान प्राकृतिक खेती का उपयोग नहीं करता है, तो बाद की किस्तों का भुगतान नहीं किया जाएगा।
- प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिये कार्यान्वयन ढाँचे, संसाधनों, कार्यान्वयन की प्रगति, किसान पंजीकरण, ब्लॉग आदि की जानकारी प्रदान करने वाला एक वेब पोर्टल भी लॉन्च किया गया है।

- कृषि मंत्रालय राष्ट्रीय कृषि विस्तार प्रबंधन संस्थान (MANAGE) तथा राष्ट्रीय जैविक और प्राकृतिक खेती केंद्र (NCONF) के माध्यम से मास्टर ट्रेनरों, 'चैंपियन' किसानों तथा प्राकृतिक खेती की तकनीकों का अभ्यास करने वाले किसानों को बड़े पैमाने पर प्रशिक्षण प्रदान कर रहा है।
- केंद्र द्वारा 15,000 भारतीय प्राकृतिक खेती जैव-इनपुट संसाधन केंद्र (Bio-inputs Resources Centres- BRCs) स्थापित किये जाने का प्रस्ताव है ताकि जैव-संसाधनों तक आसान पहुँच प्रदान की जा सके, जिसमें गोबर एवं मूत्र, नीम और बायोकल्चर की भूमिका महत्त्वपूर्ण है।
- ये जैव-इनपुट संसाधन केंद्र प्राकृतिक खेती के प्रस्तावित 15,000 मॉडल समूहों के साथ स्थापित किये जाएंगे।
- प्राकृतिक खेती स्थानीय रूप से उपलब्ध संसाधनों पर आधारित एक रसायन मुक्त कृषि पद्धति है।
- यह पारंपरिक स्वदेशी तरीकों को प्रोत्साहित करती है जो उत्पादकों को बाहरी आदानों पर निर्भर रहने से मुक्त करते हैं।
- प्राकृतिक खेती का प्रमुख ध्यान बायोमास मल्चिंग के साथ ऑन-फार्म बायोमास रीसाइक्लिंग, ऑन-फार्म देसी गाय के गोबर एवं मूत्र का उपयोग, विविधता के माध्यम से कीटों का प्रबंधन, ऑन-फार्म वनस्पति मिश्रण एवं प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से सभी सिंथेटिक रासायनिक आदानों का बहिष्करण है।

सऊदी अरब बना शंघाई सहयोग संगठन का संवाद साझेदार

समाचार पत्रों में क्यों?

सऊदी अरब सरकार ने शंघाई सहयोग संगठन (एससीओ), जो चीन और रूस द्वारा निर्देशित किया जाता है, में शामिल होने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है।

त्वरित मुद्दा?

- राजा सलमान बिन अब्दुल अजीज की अध्यक्षता में एक कैबिनेट बैठक के दौरान, एक स्मारिका को मंजूरी देने के लिए मंजूरी दी गई थी जिससे एससीओ के साथ वार्तालाप शुरू करने की शुरुआत की गई।
- रिपोर्ट के अनुसार, सदस्यता प्राप्त करने का फैसला पिछले साल दिसंबर में चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग के एक दौरे के दौरान सऊदी अरब में उठाया गया था।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि?

- दरअसल डायलॉग पार्टनर का दर्जा हासिल करना SCO की पूर्ण सदस्यता प्राप्त करने की पहली शर्त होती है।
- सऊदी अरब ने SCO में शामिल होने का ऐलान ऐसे समय पर किया है
- जब चीनी राष्ट्रपति की मध्यस्थता में कुछ ही समय पूर्व सऊदी अरब और ईरान के मध्य एक समझौता हुआ था।
- तो वहीं अमेरिका ने कुछ समय पूर्व सऊदी अरब की नई नीति को लेकर सुरक्षा चिंता जताई थी।
- यह निर्णय सऊदी तेल कंपनी अरामको द्वारा चीन में निवेश बढ़ाने की घोषणा के बाद किया गया
- जिसमें पूर्वोत्तर चीन में एक निजी स्वामित्व वाले पेट्रोकेमिकल समूह में हिस्सेदारी हासिल करना शामिल है।
- रियाद और बीजिंग के बीच बढ़ते संबंधों ने वाशिंगटन में चिंता पैदा कर दी है, जो चीनी प्रभाव को अमेरिकी हितों के लिए खतरे के रूप में देखता है।
- शंघाई सहयोग संगठन (SCO) एक स्थायी अंतर-सरकारी अंतरराष्ट्रीय संगठन है। इसकी स्थापना जून 2001 में शंघाई(चीन) में किया गया था।
- **SCO के गठन से पहले शंघाई-5 नाम का एक संगठन था।**

अन्य प्रमुख तथ्य?

भारत के लिए महत्व

- SCO का मुख्य उद्देश्य आतंकवाद, अलगाववाद और चरमपंथ के विरुद्ध सहयोगपूर्ण तरीके से कार्य करना है, जो कि भारतीय हितों के अनुकूल है।
- यह भारत को मध्य एशिया से जुड़ने के लिये मंच प्रदान कर सकता है।
- यह संगठन भारत को चीन और पाकिस्तान के साथ अपने सम्बन्ध सुधारने में भी मदद कर कर सकता है।
- संगठन के सदस्य देशों में विश्व की लगभग आधी जनसंख्या के निवास करने के कारण भारत को पर्यटन के क्षेत्र में इसका लाभ मिलने की संभावना है।
- वर्तमान में भारत में आने वाले पर्यटकों का लगभग 6 प्रतिशत भाग SCO देशों से आता है, इसे आगे और बढाया जा सकता है।

- चीन
- रूस
- किर्गिज़स्तान
- कज़ाखस्तान
- ताजिकिस्तान

- वर्ष 2001 में उज़्बेकिस्तान के शामिल होने के बाद शंघाई-5 का नाम बदलकर शंघाई सहयोग संगठन कर दिया गया।
- वर्ष 2017 में भारत तथा पाकिस्तान को इस संगठन का सदस्य बनाया गया।
- वर्ष 2021 में ईरान को पूर्ण सदस्य के रूप में शामिल किया गया और इस प्रकार अब कुल 8 पूर्णकालिक सदस्य हैं।
- वर्तमान में पर्यवेक्षक देशों में मिस्र और कतर शामिल हैं।
- SCO की आधिकारिक भाषा;-रूसी तथा मंडारिन हैं।
- इसका मुख्य लक्ष्य वर्ष 2002 में सेंट पीटर्सबर्ग में इसके चार्टर में अपनाया गया था :
- सदस्य देशों के बीच परस्पर विश्वास और पड़ोस को मजबूत करना।
- राजनीति, व्यापार, अर्थव्यवस्था, अनुसंधान और प्रौद्योगिकी और संस्कृति के साथ-साथ शिक्षा, ऊर्जा, परिवहन, पर्यटन, पर्यावरण संरक्षण और अन्य क्षेत्रों में उनके प्रभावी सहयोग को बढ़ावा देना।
- क्षेत्र में शांति, सुरक्षा और स्थिरता बनाए रखने और सुनिश्चित करने के लिए संयुक्त प्रयास करना।
- एक लोकतांत्रिक, निष्पक्ष और तर्कसंगत नई अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्था की स्थापना की दिशा में आगे बढ़ना।
- **इसके के दो स्थायी निकाय हैं –**

1. बीजिंग में SCO सचिवालय।

2. ताशकंद में क्षेत्रीय आतंकवाद रोधी संरचना की कार्यकारी समिति।

- राष्ट्राध्यक्षों की परिषद् शंघाई सहयोग संगठन में निर्णय लेने वाली सर्वोच्च संस्था है, यह SCO शिखर सम्मलेन में बैठक करती है।
- सरकार के प्रमुखों की परिषद् संगठन में दूसरी सबसे बड़ी परिषद् है, जो बार्षिक शिखर सम्मेलन का आयोजन करती है तथा संगठन के बजट को मंजूरी प्रदान करती है।
- विदेश मंत्रियों की परिषद् नियमित बैठकें करती है, जो वर्तमान अंतर्राष्ट्रीय परिस्थितियों पर चर्चा करती है।
- सचिवालय संगठन का प्राथमिक कार्यकारी निकाय है, यह संगठनात्मक निर्णयों और दस्तावेजों को लागू करता है तथा दस्तावेज डिपॉजिटरी के रूप में भी कार्य करता है।
- SCO की अध्यक्षता सदस्य देशों द्वारा रोटेशन के आधार पर एक-एक वर्ष के लिए की जाती है।
- यह संगठन दुनिया की लगभग 42% आबादी, 22% भूमि क्षेत्र और 20% सकल घरेलू उत्पाद का प्रतिनिधित्व करता है।

न्यूज फटाफट (चर्चित व्यक्तित्व)

भगवान बसवेश्वर (1105-1167)

- भगवान बसवेश्वर 12वीं सदी के कवि थे। उनका जन्म कर्नाटक में हुआ था।
- वे दक्षिण भारत में सामाजिक-धार्मिक सुधार, अनुभव मंडप, वचन साहित्य और लिंगायत आंदोलन के लिए जाने जाते हैं।
- 13वीं शताब्दी में पलकुरिकी सोमनाथ ने बसव पुराण की रचना की थी। इसमें बसवन्ना के जीवन और विचारों का संपूर्ण विवरण है।
- उन्होंने लैंगिक और जातिगत भेदभाव, अंधविश्वास तथा कर्मकांडों को खारिज कर दिया था। वे अहिंसा के एक प्रबल समर्थक। उन्होंने मानव और पशु बलि की निंदा की थी।
- उनका दर्शन अरिवु (सच्चा ज्ञान), लोकाचार (सही आचरण) और अनुभव (ईश्वरीय अनुभूति) के सिद्धांतों पर आधारित था।
- उन्होंने वीरशैव नामक एक नए भक्ति आंदोलन को विकसित और प्रेरित किया था। ये शिव के उत्साही और वीर उपासक थे।

नादप्रभु हिरिया कैंपेगौड़ा (1510-1569)

- इनका संबंध कर्नाटक में प्रमुख कृषि समुदाय वोक्कालिगा से था। वे 16वीं शताब्दी में विजयनगर साम्राज्य में एक सामंत सरदार थे।
- उन्हें बेंगलुरु के संस्थापक (16वीं शताब्दी) के रूप में जाना जाता है। उन्हें पेयजल और कृषि संबंधी जरूरतों को पूरा करने के लिए नगर लगभग 1,000 झीलों का विकास कराने के लिए भी जाना जाता है।
- **सामाजिक सुधार**: उन्हें 'बंदी देवारू' के दौरान अविवाहित महिलाओं के बाएं हाथ की अंतिम दो उंगलियों को काटने की प्रथा को प्रतिबंधित करने का श्रेय भी दिया जाता है।

- **पुस्तकें:** वे बहुभाषी थे और उन्होंने तेलुगु में एक यक्षगान नाटक 'गंगागौरी विलास' की रचना की थी।

चारू (या चरण) चंद्र बोस (26 फरवरी 1890-19 मार्च 1909)

- इनका जन्म खुलना (अब बांग्लादेश का हिस्सा) में हुआ था। वे एक क्रांतिकारी और स्वतंत्रता सेनानी थे। इन्हें अलीपुर बम कांड (1909) में फांसी की सजा दी गई थी।
- वे दिव्यांग थे। वे अनुशीलन समिति से जुड़े हुए थे और एक क्रांतिकारी संगठन युगांतर के सदस्य भी थे > उन्होंने कोलकाता और हावड़ा में अलग-अलग प्रेस तथा समाचार-पत्रों के लिए भी कार्य किया था । ० व्यक्तित्व गुणः वे साहसी और देशभक्त होने के साथ-साथ मजबूत दृढ़ संकल्प वाले व्यक्ति भी थे।

हेमू कालाणी (23 मार्च 1923 - 21 जनवरी 1943)

- इनका जन्म संयुक्त भारत के सिंध क्षेत्र में हुआ था। वे भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष के दौरान एक क्रांतिकारी और एक स्वतंत्रता सेनानी थे।
- उन्हें सिंध का भगत सिंह भी कहा जाता है। वे स्वराज सेना (एक युवा संगठन) के सदस्य थे।
- उन्होंने ब्रिटिश विरोधी साहित्य का वितरण किया था और 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन में भी शामिल हुए थे।
- वर्ष 1942 में, उन्होंने हथियारों से लदी ब्रिटिश रेल को पटरी से उतारने और लूटने का प्रयास किया था। इस रेल में रखे हथियारों का इस्तेमाल उस समय चल रहे बलूचिस्तान आंदोलन को दबाने के लिए किया जाना था।
- हालांकि, इस अभियान में वे पकड़े गए थे और 19 साल की कम आयु में ही उन्हें फांसी दे दी गई थी।
- **व्यक्तित्व गुण**: साहस, निडरता और देशभक्ति।

महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ तृतीय

- इनका जन्म नासिक के कवलाणा गांव में हुआ था। वे 1875 से 1939 तक बड़ौदा (अब वडोदरा) राज्य के महाराजा थे।
- वर्ष 1906 में, एक शासक के रूप में उन्होंने अपने राज्य में प्राथमिक शिक्षा को निःशुल्क और अनिवार्य कर दिया था। साथ ही, उन्होंने बाल विवाह पर प्रतिबंध तलाक पर कानून, अस्पृश्यता को दूर करने के प्रयास आदि सामाजिक सुधारों की शुरुआत की थी।
- **आर्थिक विकास से जुड़ी पहलें:** उन्होंने रेलमार्ग व पेयजल के लिए जलाशयों का निर्माण कराया था। वर्ष 1908 में बैंक ऑफ बड़ौदा की स्थापना की थी।
- इन्होंने डॉ. बी. आर. अम्बेडकर, दादाभाई नौरोजी और श्री अरबिंदो घोष को संरक्षण प्रदान किया था।
- **विशेषताएं:** वे एक दूरदर्शी शासक और महान राजनेता थे। उनमें रणनीतिक सोच, जोखिम लेने और दृढ़ता के गुण मौजूद थे।

स्वामी सहजानंद सरस्वती (1889-1950)

- ये एक सन्यासी के साथ-साथ एक क्रांतिकारी भी थे। इन्होंने अपना जीवन भारतीय लोगों की राजनीतिक और आर्थिक स्वतंत्रता के प्रति समर्पित कर दिया था।
- इन्होंने बिहार के शाहाबाद जिले और उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिले में असहयोग आंदोलन के आयोजन में प्रमुख भूमिका में निभाई थी।

- वर्ष 1924 से 1928 तक इनकी गतिविधियां खादी के प्रचार-प्रसार और शराबबंदी पर केंद्रित रहीं।
- इन्होंने सिमरी में एक खादी बुनाई केंद्र तथा बिहटा में राजनीतिक और संस्कृत शिक्षण के लिए एक आश्रम की स्थापना की थी।
- इन्होंने 1936 में अखिल भारतीय किसान सभा (AIKS) की स्थापना का नेतृत्व किया था।
- इन्हें 'किसान प्राण' (किसानों का जीवन) के रूप में संबोधित किया गया था।
- **पुस्तकें/प्रकाशन:** पटना से हिंदी भाषा में साप्ताहिक पत्रिका हुंकार, द अदर साइड ऑफ द शील्ड, रेंट रिडक्शन इन बिहार: हाउ इट वर्क्स, गया के किसानों की करुण कहानी आदि।
- **व्यक्तित्व के गुण:** गांधीवादी, शक्तिशाली आंदोलनकारी, प्रचारक, नेतृत्व क्षमता आदि।

डॉ जी.एन. रामचंद्रन (8 अक्टूबर 1922 से 7 अप्रैल 2001)

- जी.एन. रामचंद्रन का जन्म शताब्दी समारोह, विज्ञान में उनकी अनूठी खोजों और उत्कृष्ट उपलब्धियों को याद करने का अवसर प्रदान करता है।
- उनका जन्म केरल में कोचीन के पास एर्नाकुलम में हुआ था। जी.एन. रामचंद्रन भारत
- **उनके प्रमुख योगदान**
  - एक प्रसिद्ध जैवभौतिकीवेत्ता थे।
  - उन्होंने 1954 में गोपीनाथ करथा के साथ मिलकर कोलेजन (श्लेषजन) की तिहरी कुंडलित संरचना की खोज की थी। यह हमारे शरीर में सबसे प्रचुर मात्रा में पाए जाने वाला प्रोटीन है।
  - उन्होंने वर्ष 1963 में रामचंद्रन प्लॉट के नाम से एक सिद्धांत विकसित किया था। इसे प्रोटीन संरचना के मानक विवरण के रूप में उपयोग किया जाता है।
  - उन्होंने कंवल्शन (सवलन) तकनीक का उपयोग करके शैडोग्राफ से छवि पुनर्निर्माण के सिद्धांत का विकास किया था।
  - वे वर्ष 1981 विश्व सांस्कृतिक परिषद के संस्थापक सदस्य थे।
  - **पुरस्कार:** उन्हें 1961 में भौतिकी के लिए शांति स्वरूप भटनागर पुरस्कार प्रदान किया गया था।
  - **गुण:** वे जिज्ञासु प्रवृति के साथ वैज्ञानिक सोच वाले व्यक्तित्व थे।

श्री मोरारजी देसाई (29 फरवरी, 1896 - 28 जुलाई, 1979)

- श्री मोरारजी देसाई का जन्म गुजरात में हुआ था। वे 1918 में बंबई की प्रांतीय सिविल सेवा में शामिल हुए थे।
- उन्होंने बारह वर्षों तक डिप्टी कलेक्टर के रूप में कार्य किया था। वर्ष 1930 में वे महात्मा गांधी के नेतृत्व में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में शामिल हो गए
- वर्ष 1931 में वे अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के सदस्य बने थे।
- स्वतंत्रता के बाद, उन्होंने अलग-अलग क्षमताओं में देश की सेवा की थी। वे वर्ष 1977 से 1979 तक देश के प्रधान मंत्री रहे थे।
- उन्हें भारत (भारत रत्न) और पाकिस्तान (निशान - ए - पाकिस्तान) के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया था।
- **गुण:** वे एक उत्कृष्ट प्रशासक थे तथा सत्यवादिता और मजबूत विश्वास जैसे गुणों से युक्त थे।